eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में लोकचेतना

[1]डॉ0 परीक्षित सिंह
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, ए0पी0एन0पी0जी0 कालेज, बस्ती, उत्तर प्रदेश।

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

Abstract

केदारनाथ के काव्य में लोक संशक्ति ग्राम्य, प्रकृति, किसानी जीवन आदि कई स्तरों पर पायी जाती है। उनकी कविताओं में प्रकृति एवं ग्राम्य जीवन के माध्यम से लोक चेतना की मुखर अभिव्यक्ति हुई है। केदारनाथ का काव्य सामाजिक–राजनैतिक जन–जागृत का काव्य है। आजादी के बाद भी व्याप्त सामाजिक विषमताओं का चित्रण उनके काव्य का मुख्य विषय रहा है। उन्होंने पुरानी जीर्ण–शीर्ण मान्यताओं, कर्मकाण्ड, आडम्बर आदि पर तीव्र कुठाराघात किया।

बीज–शब्दः– संवेदना, सोंधी, चेतना, लोक, संघर्ष, जनवादी, बुर्जुआ, सामान्यजन, लोक–जीवन।

Introduction

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी कविताओं में बुन्देलखण्ड की धरती की सुंगध और लोक–जीवन की मिठास विद्यमान है। कवि की संवेदना जनसाधारण, मजदूर, किसान, गांव, समाज, लोक–परम्परा आदि से गहन रूप में जुड़ी हुई है। उनकी कविताओं में ग्राम्य–जीवन का सुन्दर, सजीव और संघर्षमय चित्र उभरता है। उनकी कविताओं में खेत की हरियाली, रात की चांदनी, बादल की घटाओं आदि का विशद चित्रण मिलता है। कवि की संवेदना आम आदमी के जीवन को सहज, सरल और समृद्ध बनाने के पक्ष में खड़ी है। केदारनाथ अग्रवाल का सम्पूर्ण जीवन बुन्देलखण्ड जनपद के बांदा कस्बे में व्यतीत हुआ। यहीं का लोकजीवन एवं प्रकृति का सौन्दर्य उनकी कविता का विषय रहे। स्थानीयता उनकी काव्यरचना की आधार भूमि रही किन्तु उसे रचना मे बदला उनकी विश्व दृष्टि ने। केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में लोक अपने विविध रूपों में उभर कर आया है। चाहे वह प्रकृति–चित्रण हो, ग्राम्य जीवन का चित्रण हो या किसानों, मजदूरों की संघर्ष गाथा हो। इन सभी वर्णनों में केदारनाथ को महारत हासिल है।

केदारनाथ अग्रवाल जीवन्त प्रकृति चित्रण के लिए अधिक ख्यात रहे। जनवादी कवि होने के कारण उन्होंने ग्रामीण–प्रकृति के चित्र अपनी कविता में अधिक चित्रित किये हैं। पेड़–पौधे,नदियों, पहाड़, फसल, सब कुछ उनकी कविताओं में उपलब्ध हो जाता है। 'खेत का दृश्य' नामक कविता में प्रकृति के इस सुन्दर दृश्य को देखा जा सकता है–

'' आसमान की ओढ़नी ओढ़े।
धानी पहने फसल घघरिया।।
राधा बनकर धरती नाची ।
नाचा हँसमुख कृषक संवरिया।। ''[1]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

केदारनाथ अग्रवाल के सम्बन्ध में अशोक त्रिपाठी ने लिखा है– ''केदार धरती के कवि हैं। खेत, खलिहान, कारखाने और कचहरी के कवि है। इस सबके दुःख–दर्द, संघर्ष और हर्ष के कवि हैं। वे पीड़ित और शोषित मनुष्य के पक्षदार हैं। वे मनुष्य के कवि हैं। मनुष्य बनना और बनाना ही उनके जीवन की तथा कवि–कर्म की सबसे बड़ी साध और साधना थी।''[2] केदरनाथ जी के प्रकृतिपरक कविताओं में बुन्देलखण्ड की धरती की सोंधी महक मिलती है। इनकी कविता में प्रकृति की विविधता और काव्यात्मक तन्मयता दोनों चीजें मौजूद है। केदारनाथ जी के प्रकृति वर्णन में प्रकृति अपनी पूरी तन्मयता के साथ उपस्थित है। इसके सौन्दर्य में अपने ढंग की अद्वितीयता है, जो जीवन संघर्षों से जुड़ी अनोखी कल्पना से उपजी है। केदारनाथ अग्रवाल सामान्य जन के समस्त राग–विरागों के कवि है। हिन्दी में इस श्रम–सौन्दर्य के सबसे बड़े गायक को देश समाज, काल और राजनीति के साथ जीवन के भिन्न –भिन्न रूपों के वर्णन में महारत हासिल है। प्रेम, प्रकृति, नदी, पहाड़, जंगल, झरने, खेत–खलिहाल कुछ भी उससे अछूता नहीं है। खड़ी बोली में लोकबिम्ब और प्रतीकों की साधना तो उनकी कविता में हर जगह दिखाई देती है–

''धूप चमकती है चांदी की साड़ी पहने,
मायके में आई बेटी की तरह मगन है।'' [3]

केदारनाथ अग्रवाल ने प्रकृति के माध्यम से विभिन्न जीवों और मनुष्यों की निजता, जीवटता और विजय संघर्ष की गाथा रची है। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से अन्याय , शोषण और अत्याचार का विरोध किया है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता जन सरोकारों से युक्त है। केदारजी मुख्यतः मानववादी कवि हैं। लोक जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जो उनकी दृष्टि से छूटा हो। उन्होंने सदैव जनता के बीच रहकर उनके कल्याण के लिए संघर्ष किया । वे किसानों के प्रतिनिधि हैं और ग्रामीण जीवन से लेकर श्रमिक की समग्रता ही उनकी मुख्य काव्य वस्तु है। केदारनाथ अग्रवाल के काव्य की मुख्य संवेदना लोकधर्मी है। उनका काव्य–साहित्य जनता की खराब दशा को सुधारनें का तार्किक और वैज्ञानिक प्रयास है। वे लोक कवि है। वे भी कबीर की भांति बिना लाग लपेट की खरी–खरी बात करते हैं। उनकी रचनाओं में लोक की सहजता और अक्खड़ता मिलती है। कवि नें उन मनुष्यों के जीवन को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है जो अशिक्षित और जो दुनियादारी के दांव–पेंच से अनभिज्ञ सहज और सरल जीवन जीते हैं। केदारनाथ अग्रवाल का सम्पूर्ण साहित्य लोक चेतना से सम्पृक्त है। लोक की चिन्ताओं को उनकी सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक तथा प्रेम और प्रकृति की कविताओं में देखा जा सकता है। उनके काव्य में लोक के सभी रूप प्रकट हुए हैं।

केदारनाथ की लोकचेतना इतनी गहरी है कि वे अपना सर्वस्व न्योछावर कर लोक के जीवन में जागरूकता और उत्थान लाने के लिए प्रतिबद्ध है–

''कि जब मरूं,
तो संसार को संवारते संवारते मरूं।
संवारने का सुख,
भोगते–भोगते मरूं। [4]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में लोकधर्मी संवेदना विस्तृत फलक पर व्यक्त हुई है, जिसका प्रसार लोकजीवन के चित्रण, श्रम का महत्व, सामाजिक गतिशीलता, प्राकृतिक प्रेम और युग बोध की संवेदना से कहीं आगे तक फैला है। वे लोकजीवन के मिठास के गहरे स्तर तक पहुंचा है। केदारनाथ अग्रवाल की रचनाओं में बुन्देलखण्ड अंचल की बांदा धरती के मिट्टी की महक और उस मिट्टी के निवासियों का जीवन अपनी समूची विशेषताओं के साथ मौजूद है। केदारनाथ की कविता किसानी जीवन की कविता है। किसानी जीवन की समस्या को चित्रित करते हुए लिखते हैं–

गेहूँ में गेरूआ लगा,
घोंघी ने खा लिया चना,
बिल्कुल बिगड़ा खेल बना।
अब आफत से काम पड़ा,
जोखू बाजी हार गया ,
लकवा उसको मार गया। [5]

निःसन्देह केदारनाथ अग्रवाल की सहजता भारतीय लोकजीवन के चित्रण में जीवन्त हो उठती है। वे वास्तव में भारत के ग्राम्य जीवन, कृषि संस्कृति और वास्तविक भारत से सम्बन्ध रखते हैं। केदार की संवेदना गांव और धरती की उपज है। केदारनाथ अग्रवाल भारतीय लोकजीवन के प्रतिनिधि कवि है। उनमें सीधी, सरल, सच्चे मन की अभिव्यक्ति है। उनके यहां कसीदाकारी नहीं है बल्कि लोक जीवन का बेवाक दर्शन है। कविता के इतनें बड़े विस्तार को जीते हुए भी वे अपनी लोक संवेदना की बुनियाद से कभी विलग नहीं हुए । केदार की संवेदना का मूल गांव की संवेदना है। उनकी कविताओं में गांव के रस्म–रिवाज, पर्व–त्योहार, गांव के विविध पहलू अपने सहज भाव के साथ यथार्थ रूप में प्रकट होते है। ग्रामीण संवेदना अपने सजीव विम्ब के रूप में कविताओं में निखरी है–

दूब कुएं के पास पड़ी व्याकुल मुरझाती
गहरा पानी और कुएं का गहरे जाता
साठ और सत्तर हाथी की रज्जु नापता
लौकी, कुम्हड़ा , कद्दू, करैला की तरकारी
जिन्हें नाज देकर खरीदते ग्राम निवासी
वह भी तिथि त्योहार कभी बनती है भाजी। [6]

डॉ0 राम विलास शर्मा का कथन है कि ''केदार की चेतना मूलतः किसान की चेतना है।''[7] वे गरीब किसानों और निम्नवर्गीय ग्रामीण जीवन के चितेरे है। उनकी गहरी संवेदना किसानों की जीवन–परिस्थतियों ,लोकजीवन, और लोक आचरण से है। 'लोक' केदार की कविता का प्राणतत्व है, उससे वे क्षणभर के लिए भी विरत नहीं होते। केदारनाथ की कविताएं लोक–संवेदना और लोकजीवन की घोषित कविताएं है। अतः कवि ने अपना सर्वस्व लोक को सौंप दिया है। इस लोक में अपने को समा देने के कारण कवि में 'निज' और 'पर' का भेद मिट गया है जो कवि–कर्म का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। केदार स्वयं अपने कवि कर्म के बारे में 'मार प्यार की थापें' काव्य संग्रह की भूमिका में लिखते

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

हैं– ''सत्य यह है कि व्यक्ति की चेतना को लोक–चेतना में प्रविष्ट करना चाहिए और उसे प्रभावित करना चाहिए तथा उसे नये मानवीय मूल्यों का संस्कार देकर समाजवादी जनतंत्र की छवियों को प्रतिबिंबित करना चाहिए। तभी कृतिकार का 'मैं' दूसरों का 'हम' बन सकता है। ग ग ग ग ग स वही वैयक्तिक 'आत्मानंद' की परिधि से निकलकर 'लोकमांगलिक आनंद' की प्रदाता होती है। कवि–कर्म के बारे में मेरी यही धारणा है।''[8] 'लोक' से तादात्म्य और अपने को उसी में विलीन कर देनें के कारण ही केदार की कविता 'लोक' की कविता बनती है। केदारनाथ अग्रवाल काव्यभाषा के उस लोक प्रचलित रूप को अपनाते है, जिसे भारत का आदमी बोलता और समझता है। अपनी काव्यभाषा के माध्यम से उन्होंने कबीर, प्रेमचन्द और निराला की लोकवादी परम्परा को ही आगे बढ़ाया है। उनकी भाषा लोक प्रचलित जनभाषा है। अग्रवाल जी उन शब्दों का चयन करते है जो लोक संवेदना को प्रकट करने में सहज ही सक्षम है। केदारनाथ की कविताएं सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं आडम्बरों का विरोध करती है। उन्होंने अंधविश्वासों और अतार्कफिक लोकविश्वासों के प्रति अपनी असहमति व्यक्त की है। कवि को लोक जीवन से सरोकार है, वह उसमें सुधार करना चाहते हैं। वह मनुष्य में कर्मण्यता की भावना एवं लोकचेतना को जागृत करना चाहते है। आम आदमी की सोच को 'मर्म को भीतर छिपायें' कविता में कवि ने अभिव्यक्त किया है–

मर्म को भीतर छिपाये,
जान को जोखिम से बचाये.....
अंतहीन यात्रा का
अंत खोजते
पास आती मौत को
मनौतियों से रोकते।[9]

केदारनाथ अग्रवाल ने अपने काव्य के माध्यम से पुरानी मान्यताओं और मूल्यों के पतझड़ में जनवादी नये मूल्यों एवं विचारों के बसमंत का प्रसार करना चाहते है। केदारनाथ की रचनाओं में ग्रामीण जनजीवन की धड़कनें बोलती हैं। सही अर्थो में वे ग्रामीण सामाजिक जीवन के चितेरे है। उनकी रचनाओं में गांव–समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है। डॉ0 रामविलास शर्मा के अनुसार ''केदार का गांव सारे देश की प्रगति–दुर्गति का मानदण्ड बना जाता है।''[10] भारतीय ग्रामीण जीवन की आत्मा उसके खेतों में है। केदारनाथ लोकधर्मी संवेदना के कवि हैं। वे समाज में नये युग की स्थापना करना चाहतें है। पुरातन जीर्ण–शीर्ण व्यवस्था को बदलकर लोकवादी व्यवस्था की स्थापना करना चाहते हैं। डॉ0 खगेन्द्र ठाकुर केदारनाथ अग्रवाल की संवेदना के बारे में लिखते है कि ''वे जीवन की समग्रता के कवि हैं। ''[11] केदारनाथ अग्रवाल जनकवि है। वे आम जनमानस के उत्थान के लिए उसमें चेतना भरते रहें, उसमें आत्मविश्वास भरते रहे । केदारनाथ अग्रवाल की कविताएं गांव, समाज और प्रकृति से संबन्धित कविताएं है। जिसमें लोकजीवन की मिट्टी की सुगंध रची बसी है। वे लोक के जन के नायक है। केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में उद्दाम जिजीविषा और लोकधर्मी संवेदना का संघर्षबोध है। केदारनाथ का मानना है कि लोक–जन के सपने तभी सच होंगे जब लोक–समाज

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

जागरूक होगा और उसके लिए संघर्ष करेगा। केदार का काव्य इसी लोक–समाज को जागरूक करने का हथियार है।

केदारनाथ की कविता ग्रामीण परिवेश और लोक जीवन में गहराई से धंसी हुई है। उनकी कविता लोक को जगाने की कविता है। उनके मन में सामान्य जन के मंगल की भावना विद्यमान है। उनकी रचना का केन्द्र–बिन्दु सर्वहारा , मजदूर और किसान है। उसे जागृत करना और प्रेरित करना कवि का उद्देश्य रहा है। बुर्जुआ धारणाओं , पाखण्डी और कर्मकाण्डीय विश्वासों , अंधभक्ति व अंधविश्वासों एवं अंतार्किक धारणाओं आदि से लोगों को मुक्त करना अनिवार्य है। अन्यथा गांवों का विकास तथा ग्रामीणों में सचेतना व संवेग आना संभव नहीं है। निःसंदेह केदारनाथ की कविता लोकजीवन के चित्रण में जीवंत हो उठी है। वे वास्तव में भारत के ग्राम्य जीवन , कृषि–संस्कृति और वास्तविक भारत से संबन्ध रखते है। लोक–जीवन के सुख–दुख , हर्ष–विषाद और उसकी टूटती आकांक्षाओं को चित्रित करना केदारनाथ की कविता का मुख्य गुण–धर्म रहा है। उनकी कविता में लोक–जीवन की मधुरता तथा किसानी जीवन के संघर्ष का जीवंत अंकन मिलता है। वे सामान्य जन की यातना और उसके जीवन की विडम्बनाओं को व्यक्त करते है। केदारनाथ की काव्य संवेदना लोक–जीवन के सभी रंगों को छूती है। उनका रचना संसार विविधता से भरा हुआ है। कवि केदारनाथ की कविताएं लोकधर्मी संवेदना के गीत है जिन्हें जनता सहज अपना बना ली है। अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि कवि केदार सरलता , सहजता और लोक–जीवन के गायक हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. फूल नहीं रंग बोलते हैं, संपा0 अशोक त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2009, साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 31
2. 'कहे केदार 'खरी–खरी' की भूमिका से , अशोक त्रिपाठी , प्रथम संस्करण 2009, साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 9
3. फूल नहीं रंग बोलते हैं, संपा0 अशोक त्रिपाठी, प्रथम संस्करण 2009, साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 63
4. केदारनाथ अग्रवाल , मार प्यार की थापें, , प्रथम संस्करण 2009 , साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 32
5. केदारनाथ अग्रवाल , कहे केदार खरी खरी, , प्रथम संस्करण 2009 , साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 23
6. केदारनाथ अग्रवाल , कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह, , प्रथम संस्करण 2009 , साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 243
7. प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल , संपा0 रामविलास शर्मा, प्रथम संस्करण 2009, साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 45
8. केदारनाथ अग्रवाल , मार प्यार की थापें, , प्रथम संस्करण 2009 , साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 5
9. केदारनाथ अग्रवाल, अपूर्वा, प्रथम संस्करण 2009, साहित्य भण्डार प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 – 33
10.. प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल , संपा0 रामविलास शर्मा, प्रथम संस्करण 2009, साहित्य भण्डार प्रकाशन , इलाहाबाद , पृ0 – 46
11. वसुधा पत्रिका , पृ0–70 , जनवरी–जून , 1987